राजपूतोंकीपराजयकेकारण

भारतकीसबसेवीरतथासाहसीजातिराजपूतोंकोथी, जोबड़ीहीरणप्रियतथायुद्धकुशलथी।परन्तुजबभारतपरमुसलमानोंकेआक्रमणआरम्भ हुएतबवह 'उन्हेंरोकनसकीऔरदेशकीराजनीतिकस्वतन्त्रताकीरक्षानकरसकी।राजपूतोंकीइस विफलताकेनिम्नलिखितकारणथे :

(१) राजनीतिकएकताकाप्रभाव-
जिनदिनोंभारतपरमुसलमानोंकेआक्रमणआरम्भहुएउनदिनोंभारतमेंराजनीतिकएकता कासर्वथाअभावथा।देशकेविभिन्नभागोंमेंछोटे-छोटेराज्योंकीस्थानाहोगईथीऔरदेशमेंकोईऐसीप्रबलकेन्द्रीयशक्तिनथी, जोविदेशीआक्रमणकारियोंकासफलतापूर्वकसामनाकरसकती।डॉ०ईश्वरीप्रसादनेतत्का लीनराजनीतिकस्थितिपरप्रकाशडालतेहुएलिखाहै, "सम्पूर्णदेशअनेकछोटे-छोटेस्वतन्त्रराज्योंमेंविभक्तथा, जोसदैवएकदूसरेसेलड़ाकरतेथे."उनमेंएकताऔरसंगठनकीकमीथी।

(२) पारस्परिकईर्ष्या-द्वेष—इनछोटे-छोटेराजपूतराज्योंमेंसदभावनातथासहयोगकासर्वथाअभावथा।येएक-दूसरेसेईर्ष्याद्वेषरखतेथेऔरएक-दूसरेकोनीचादिखानेकेलिएउद्यतरहतेथे।इनमेंआपसमेंनिरन्तरसंघर्षचलतारहताथा, जिससेउनकीशक्तिक्षीणहोतीजारहीथी।आंतरिककलहकेकारणवेआपत्ति-

कालमेंभीशत्रुकेविरुद्धकभीसंयुक्तमोर्चाउपस्थितनकरसकेऔरएकएककरकेशत्रुके समक्षधराशायीहोगये।डॉ०ईश्वरीप्रसादनेठीकहीलिखाहै,
"हिन्दुओंकीराजनीतिकव्यवस्थाप्राचीनआदर्शोंसेगिरचुकीथीऔरपारस्परिकईष्या-द्वेपतथाझगड़ोंसेइनकीशक्तिक्षीनहोगईथी.
विद्वेषकेकारणवेएकनेताकीआज्ञाकापालननहींकरपातेथेऔरसंकट-
काल मेंभीजबविजयप्राप्तकरनेकेलियेसंयुक्तमोर्चेकीआवश्यकतापड़तीथी,
वअपनीव्यक्तिगतयोजनाओंकोकार्यान्वितकरतेरहतेथे।शत्रुकेविरुद्धजोसुविधाएँउन्हें प्राप्तरहतीथीउनसेकोईलाभनहींउठापातेथे।

(३) सीमा-नीतिकाअभाव –
राजपूतोंनेबहुतबड़ीभूलयहकीथीकिउन्होंनेसीमाकीसुरक्षामेंकोईव्यवस्थानकीथी। इसकापरिणामयहहोताथाकिदेशमेंप्रवेशकरनेमेंशत्रुकोकोईकठिनाईनहींपड़ती थी।नतोउत्तरीपश्चिमीसीमाकीकोईकिलेबन्दीकीगईथीऔरनवहाँपरकोईसेनाहीर खीगईथी।सीमान्तप्रदेशमेंजोछोटे-छोटेराज्यथे,
वेमुस्लिमआक्रमणकारियोंकासामनानकरसके।राजपूतोंकीइसउदासीनतापरप्र काशडालतेहुएडॉ०ईश्वरीप्रसादनेलिखाहै,
"ऐसाप्रतीतहोताहैकिभारतीयराज्योंकाकोईसतर्कविदेशीकार्यालयनथाऔरनउन्हों नेसीमाकीकोईव्यवस्थाहीनहीकीऔरनहिन्दूकुशकेउसपारजोराज्यथेउनकीशक्ति , साधनअथवाराज्यविस्तारकोजाननेकाप्रयत्नहीकियागया।

(४) राजपूतोंकारक्षात्मकयुद्ध -
सीमाकीसुरक्षाकीसमुचितव्यवस्थानहोनेकेकारणशत्रुसरलतासेदेशमेंप्रवेशकरजा तेथे,
जिसकापरिणामयहहोताथाकिराजपूतोंकोरचनात्मकयुद्धकरनापड़ताथाऔरसभी

युद्धभारतभूमिपरहीहोतेथे।इसकापरिणामयहहोताथाकिविजयचाहेजिसदल की हो क्षतिभारतीयोंकोहीउठानीपड़तीथी।उनकीकृषितथासम्पत्तिनष्ट भ्रष्ट हो जाती थी।

(५)राजपूत कीसैनिकदुर्बलतायें-राजपूतोंमेंअनेकसैनिकदुर्बलताएँ थी जिससे वे मुसलमानोकेविरुद्धसफलनहोसके।राजपूतोंकीसैनिकर्बलताओंपरप्रकाशडालते हुएडॉ०ईश्वरीप्रसादनेलिखाहै, "राजपूतोकीसैनिकव्यवस्था पुराने ढंगकीथी।जबउन्हेंभयानकतथासुशिक्षितघुड़सवारों के नेताओं सेलड़नापड़ातबउसकाहाथियोंपरनिर्भररहनाउसकेलियेबड़ाघातकसिद्धहुआ।य द्यपिहिन्दुओंकोउनकेअनुभवनेअनेकबारचेतावनीदी, परन्तुहिन्दूसैनिकनेनिरन्तरइसकीउपेक्षाकीऔरअपनेपुरानेढंगसेहीयुद्धकरतेरहे। "

उनकीपहलीदुर्बलतायहथीकिउनकीसेनामेंपैदलसैनिकोंकीसंख्याअत्यधिकहोती थी, जिससेउसकातीव्रगतिसेसंचालनकरनाकठिनहोजाताथाऔरवहमुस्लिमअश्वारोहि योंकेसामनेठहरनहींपातीथी।राजपूतलोगतलवार, भालेआदिसेलड़तेथे, जोमुस्लिमतीरंदाजोंकेसामनेठहरनहींपातेथे।राजपूतलोगअपनेहाथियोंकोप्रायःअ पनीसेनाकेआगेरखतेथे।यदियेहाथीकभीबिगडकरघूमपड़तेथे, तोअपनीहीसेनाकोरौंदडालतेथे।विदेशोंकेसाथ. कोईसम्बन्धनरखनेकेकारणराजपूतलोगनई-नईरण-पद्धतियोंसेभीअनभिज्ञथे।राजपूतसेनापतिकेवलसेनाकासंचालनहीनहींकरतेथेवर न्वेस्वयंलड़तेभीथेऔरअपनीरक्षाकीचिन्तानहींकरतेथे।इससेकभी-कभीसेनापतिघायलहोजानेपरसारीसेनाभागखड़ीहोतीथी।राजपूतलोगोंनेएकऔर

भूलकीथी।वेअपनीसारीसेनाकोएकसाथलगादियाकरतेथे।इससेसुरक्षाकीकोईदू
सरीपंक्तिनहींरहजातीथी।इससेएकबारमेंहोयुद्धकानिर्णयहोजाताथा।